यीशु के साथ घनिष्ठता

फ्रैंकलीन द्वारा

यूहन्ना 1:35-51 का अध्ययन

यूहन्ना 1:35 दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से **दो जन** खड़े हुए थे।

पद 1 **केवल दो शिष्य** ! यूहन्ना ने बहुत से लोगों को बपतिस्मा दिया (लूका 3:10)

दो ही क्यों ??? बाकी कहाँ थे ???

इन दो शिष्यों के लिए, उनकी **प्रथम प्राथमिकता** यीशु मसीह को ढूँढने तथा उसके बारे में और अधिक जानने की थी।

यीशु ने हमें बीज बोनेवाले के दृष्टांत में बताया कि **क्यों केवल थोड़े ही लोग होते हैं :** मरकुस 4:19 से आगे

बीज = परमेश्वर का वचन और चार प्रकार के लोग :

- मार्ग के **किनारे** - **शैतान** तुरंत आकर वचन को उठा ले जाता है
- **पत्थरीली** भूमि - **क्लेश** या **उपद्रव** होता है और तुरंत गिर जाते हैं।
- **कँटीली** झाड़ी - संसार की **चिंता**, **धन** का धोखा और **वस्तुओं** का लोभ (**सुख विलास** लूका 8:14) वचन को दबा देता है।
- **अच्छी भूमि** - वचन सुनकर ग्रहण करते हैं, **फल लाते** हैं, 30, 60, और 100 गुना।

चिंताएं : वचन को दबा देती हैं मत्ती 6:25-33 इस कारण मैं तुमसे कहता हूं कि अपने प्राण के लिए यह **चिन्ता न करना** कि हम क्या खाएंगे या क्या पीएंगे; और न ही ... कि क्या पहिनेंगे। [31] इसलिए यह कह कर **चिन्ता न करो**, .. पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। [33] परन्तु तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो तो **ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी।**

फिलिप्पियों 4:6-7 **किसी भी बात की चिन्ता न करो**, परन्तु प्रत्येक बात में प्रार्थना और निवेदन के द्वारा तुम्हारी विनती **धन्यवाद** के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाए। (7) तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से परे है, तुम्हारे **हृदय** और तुम्हारे **विचारों** को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।

तीतुस 2:11-12 क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट है, ... और हमें चिताता है, कि हम अभक्ति और **सांसारिक अभिलाषाओं** से मन फेरकर इस युग में **संयम** और **धर्म** और **भक्ति** से जीवन बिताएं।

धन : वचन को दबा देता है लूका 16:1, 10 - 15 तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

1 तीमुथियुस 6:9 पर जो **धनी** होना **चाहते** हैं, वे ऐसी **परीक्षा**, और **फंदे** और बहुतेरे व्यर्थ और **हानिकारक लालसाओं** में फंसते हैं, जो मनुष्यों को **बिगाड़** देती हैं और **विनाश** के समुद्र में डूबा देती हैं।

इब्रानियों 13:5 तुम्हारा स्वभाव **लोभरहित** हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर **संतोष किया करो**
1 तीमुथियुस 3:3; 6:10

वस्तुएँ / सुख विलास (लूका 8:14) वचन को दबा देते हैं

1 यूहन्ना 2:15 तुम न तो संसार से और न संसार में की **वस्तुओं** से प्रेम रखो
1 तीमुथियुस 6:8 यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो, तो इन्हीं पर **सन्तोष करना** चाहिए।

दानिएल 12:4 भविष्यवाणी : अन्त समय ... बहुत लोग पूछ- पाछ और ढूंढ- ढांढ करेंगे
खेल कूद / खरीदारी करना / इत्यादि

पौलुस का हृदय : फिलिप्पियों 3:7-9 परन्तु जो जो **बातें** मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण **हानि** समझ लिया है। (8) वरन मैं अपने **प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता** के कारण **सब बातों को** हानि समझता हूं: जिस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिस से **मैं मसीह को प्राप्त करूं।** (9) और उस में (या उसके साथ) पाया जाऊं

अपने एक भजन "when I survey the wondrous cross" में आइसैक वाट्स इन "बातों" के जाल को पहचानते हुए लिखते हैं : ऐसा न हो कि मैं घमंड करूँ - सिवाय अपने राजा मसीह की सलीब में - और जो कुछ व्यर्थ बातें मुझे लुभाती हैं - उन्हें मैं दूर करके, सिर्फ क्रूस से लिपटा रहता हूँ।

- यह समस्या है - जो बातें लुभाती हैं ... जो हमारा समय और ध्यान आकर्षित करती हैं

यह हृदय / प्राथमिकताओं / का मामला है, जो आपके लिए महत्व को रखती है।
क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा। मत्ती 6:21

यही कारण है कि क्यों हमेशा > केवल कुछ ही होते हैं

लूका 17:11-19 क्या दसों शुद्ध न हुए तो फिर वे नौ कहां हैं?

- वे नौ जन धन्यवादी तो थे लेकिन वे यीशु के साथ सम्बन्ध नहीं बना पाए 2 कुरि 5:19
- हम कितनी आशीषें प्राप्त करके आनंद से अपने मार्ग में चले जाते हैं।
- धन्यवाद का दृष्टिकोण 1 थिस्सलुनीकियों 5:18 हर बात में धन्यवाद करो; क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।

यीशु ने विशाल भीड़ को शिक्षा दी > परन्तु उन में से कौन वास्तव में उसके पीछे आए?

उसने बारह शिष्यों को बुलाया - परन्तु कुछ शिष्य दूसरों के मुकाबले यीशु के अधिक निकट थे।
12 शिष्यों में से **>** **3** शिष्य बाकी शिष्यों से अधिक यीशु के पीछे चले
इन **3** शिष्यों में से **>** 1 ऐसा था जो बाकी से अधिक यीशु के पीछे चला : **यूहन्ना 13:21 +**

यूहन्ना के **इन दो शिष्यों** के लिए - उनकी इच्छा / बाकी वस्तुओं से पहले उनकी प्राथमिकता / उनकी भूख और प्यास **>**

उसे और अधिक घनिष्ठता से **जानने** की थी !

बार बार समय समय पर यीशु ने हमसे प्रतिज्ञा की :

व्यवस्थाविवरण 4:29	परन्तु वहां तुम अपने परमेश्वर यहोवा की **खोज करोगे**, और यदि तुम **अपने सारे मन और अपने सारे प्राण** से उसकी खोज करो तो वह तुम को मिल जाएगा।
1 इतिहास 22:19	अब तू अपने **हृदय और प्राण को** अपने परमेश्वर यहोवा की **खोज** में लगा;
2 इतिहास 12:14	उसने वह कार्य किया जो बुरा है, अर्थात् उसने अपने मन को यहोवा की **खोज** में न लगाया।
भजन संहिता 34:10	यहोवा के **खोजियों** को किसी भली वस्तु की घटी न होगी।
भजन संहिता 105:4	यहोवा और उसके सामर्थ्य को **खोजो**; निरन्तर उसके दर्शन के **खोजी** बने रहो।
नीतिवचन 28:5	जो यहोवा की **खोज** में रहते हैं, वे सब कुछ **समझते** हैं।
यशायाह 55:6	जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी **खोज** में रहो, **जब तक वह निकट है** तब तक उसे **पुकारो।**

वह अभी आप के बहुत निकट है ! दिन प्रति दिन
वह जा रहा है .. क्या आप उसके पीछे जाएँगे या कँटीली झाड़ियों में उलझे रहेंगे? यह एक परीक्षा है (कि आप किससे अधिक प्रेम करते हैं) **>** एक अवसर **>** आप क्या करेंगे?

यूहन्ना 1:36-37 और उसने यीशु पर जो जा रहा था, दृष्टि करके कहा, "देखो, यह परमेश्वर का मेमना है।" (37) तब वे दोनों चेले उसकी यह सुनकर **यीशु के पीछे हो लिए।**

यह शिष्यता है **>** यीशु को खोजने और अनुसरण करने के लिए हृदयों को तैयार करना

यूहन्ना 1:38 यीशु ने मुड़कर उन्हें अपने पीछे आते देखा और उनसे कहा, **"तुम किसकी खोज में हो?"** उन्होंने कहा, "हे रब्बी (अर्थात् हे गुरु), तू कहाँ रहता है?"

- आप इस प्रकार उसका ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। उसके साथ अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध को खोजने और उसकी इच्छा रखने का आरम्भ करके। उसके पीछे हो लें।
- वे यीशु के आमने सामने / आँखों के सामने। यह कैसा होगा?
- और यीशु ने उनसे एक प्रश्न किया - यही प्रश्न वह हम से बार बार पूछता है :

  तुम किसकी खोज में हो? - तुम क्या ढूँढ रहे हो?
  आपको क्या चाहिए / आपकी क्या इच्छा है?

  - वह आपका हृदय देखता है। आपको उसे सच सच बताना चाहिए

- उनके पास एक अच्छा जवाब था - तू कहाँ रहता है? वे **उसके साथ** रहना चाहते थे / उसके साथ **बसना** चाहते थे।
  - यूहन्ना 15:7 **यदि** तुम **मुझ में बने रहो** और **मेरा वचन** तुम में बना रहे, तो जो चाहो माँगो ... इस तरह हमें अपनी प्रार्थनाओं का जवाब मिलता है !
  - क्योंकि : **वह ... अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।** इब्रानियों 11:6

आपकी इच्छा क्या है? - आप किसका अनुसरण कर हैं ? - आपको किसकी धुन है? कार्य करने के लिए आप किससे प्रेरित होते हैं?

लोगों को जिस बात की धुन होगी, उसी बात का अनुसरण करेंगे

1. **यूहन्ना 17:24** **यीशु** की धुन / प्रेरणा
2. **लूका 10:38-42** मार्था : बहुत सी **बातों से विचलित - चिंतित - व्याकुल हो गयी** - कँटीली झाड़ी। मरियम "केवल एक बात"
3. **भजन संहिता 27:4** **दाऊद** की धुन :
   प्रेरितों के काम 13:22 मुझे एक मनुष्य, यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है, वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।

4. **निर्गमन 33:7-11** यहोशु की **धुन** : पर यहोशू नामक एक जवान, .. तम्बू से बाहर न निकलता था।

मूसा के साथ मिस्र से निकले सभी जवानों में, केवल एक ऐसा था जो सचमुच परमेश्वर की बातों के पीछे चलता था :

- सभी जवानों में, केवल एक था - जिसने **केवल एक बात** ... की इच्छा रखी।
- अन्य लोग क्यों नहीं थे?

2 तीमुथियुस 3:1-5 पर यह स्मरण रख कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएँगे। (2) क्योंकि मनुष्य **स्वार्थी**, **लोभी**, ... **निन्दक ... कृतघ्न, अपवित्र**, (3) **दयारहित, ... असंयमी** ... (4) ... और **परमेश्वर के नहीं वरन् सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे।**

2 इतिहास 16:9 देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है **कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है**, उनकी **सहायता** में वह अपनी सामर्थ्य दिखाए।

यूहन्ना 1:39 उसने उनसे कहा, "आओ और देख लो।" तब उन्होंने जाकर उसके रहने का स्थान देखा, और उस दिन उसके साथ रहे। यह दसवें घंटे के लगभग था।

यूहन्ना 11:40 यीशु ने उस से कहा, "... यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा देखेगी?"

लूका 4:18 यीशु अंधों को दृष्टि देने के लिए आया।

यीशु ने सबसे कहता है : आओ और देख लो"। यह बिलकुल सच है।

यीशु को देखने की प्रेरणा के साथ यत्न से यीशु का अनुसरण करने का एक अच्छा उदाहरण :
मत्ती 9:27 - 30 जब यीशु वहां से आगे बढ़ा तो **दो अंधे** उसके पीछे यह चिल्लाते और पुकारते हुए चले, "हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर!" (28) और जब वह घर में प्रवेश कर चुका तो वे अंधे उसके पास आए। यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं यह कर सकता हूं?" उन्होंने उस से कहा, "हां, प्रभु।" (29) तब उसने यह कहते हुए उनकी आंखों को स्पर्श किया, "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो जाए।" (30) और **उनकी आंखें खुल गईं।**

लूका 24:13 -35 इम्माऊस के रास्ते पर दो
(15) यीशु स्वयं वहां **आकर** उनके **साथ** चलने लगा, (16) परन्तु **उसे पहचानने को उनकी आंखें बन्द कर दी गई थीं।** (17) उसने उनसे कहा, "तुम चलते हुए परस्पर ये सब क्या बातें कर रहे हो?" (27) तब उसने

मूसा से प्रारम्भ करके सब नबियों और समस्त पवित्रशास्त्र में से अपने सम्बन्ध की बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया। (28) जब वे उस गांव के निकट पहुँचे जहां जा रहे थे तो उसने ऐसा दिखाया मानो कि आगे बढ़ जाना चाहता हो। (29) **उन्होंने आग्रह कर के कहा**, "**हमारे साथ ठहर जा**, क्योंकि सन्ध्या हो रही है और दिन लगभग ढल चुका है।" वह उनके साथ ठहरने के लिए भीतर गया। (30) तब ऐसा हुआ कि जब वह उनके साथ भोजन करने बैठा तो उसने रोटी लेकर धन्यवाद दिया, और तोड़कर उन्हें देने लगा। तब **उनकी आंखें खुल गईं** और उन्होंने उसे पहचान लिया

लूका 16:16 तत्पश्चात परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया गया और प्रत्येक व्यक्ति उस में **बलपूर्वक** प्रवेश कर रहा है।

- आओ और देख लो -

यूहन्ना 1:40 - 51 उन दोनों में से जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे, एक तो शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। (41) **उस ने पहिले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर** उस से कहा, कि हम को ख्रिस्त अर्थात् मसीह मिल गया। (42) **वह उसे यीशु के पास लाया**:

- जो लोग प्रभु की उपस्थिति में समय बिताते हैं, वे **आनंद से** अन्य लोगों को ढूंढते और उन्हें बताते हैं।

(43) दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना चाहा; और **फिलिप्पुस** से मिलकर कहा, **मेरे पीछे हो ले।** (44) फिलिप्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी था। (45) **फिलिप्पुस ने नतनएल से मिलकर** उस से कहा, कि जिस का वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, **वह हम को मिल गया**; वह यूसुफ का पुत्र, **यीशु नासरी** है।

(46) **नतनएल** ने उस से कहा, क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है? फिलिप्पुस ने उस से कहा, **चलकर देख ले।** (47) यीशु ने **नतनएल को अपनी ओर आते देखकर** उसके विषय में कहा, देखो, यह सचमुच इस्त्राएली है: इस में कपट नहीं। (48) नतनएल ने उस से कहा, तू मुझे कहां से जानता है? यीशु ने उस को उत्तर दिया; उस से पहिले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब **मैं ने तुझे देखा था।**

इससे पहले कि आप उसे देखते, **उसने आपको देख लिया** था। वह अपनों की निगरानी करता है।
उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया। इफिसियों 1:4

(49) नतनएल ने उस को उत्तर दिया, कि हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्त्राएल का महाराजा है।

(50) यीशु ने उस को उत्तर दिया; मैं ने जो तुझ से कहा, कि मैं ने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा, क्या तू इसी लिये विश्वास करता है? तू इस से बड़े बड़े काम देखेगा। (51) फिर उस से कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते और ऊपर जाते देखोगे।"

पद 50 में आपके लिए एक **वायदा** है : जितना अधिक आप उसके साथ समय बिताएँगे, उतना ही अधिक आप **बड़े बड़े काम** देख पाएँगे ... स्वप्न / दर्शन / प्रकाशन

- हमारा चुनाव : बड़े बड़े **काम** ... या ... इस संसार की **बातें**

हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी **मेरे साथ** हों, **कि वे मेरी उस महिमा को देखें** जो तू ने मुझे दी है। यूहन्ना 17:24

देखो, आज ही वह उद्धार का दिन है। 2 कुरि 6:2

- ताकि आप यह निर्णय लें कि आपके लिए क्या महत्वपूर्ण है।
- ताकि आप यह निर्णय लें कि आप क्या खोजेंगे
- ताकि आप अपनी प्राथमिकताओं की दिशा बदलें

यह ऐसा है मानो, हमारे पास अपना पासपोर्ट है - हमारे पास अपना टिकट है - हमें नए और ऊंचे स्थानों पर जाने के लिए टर्मिनल में प्रवेश भी मिल गया है - लेकिन ...

यह ऐसा है मानो हम एअरपोर्ट पर समान रखने के हिंडोले (BAGGAGE CAROUSEL) पर बैठकर गोल गोल घूम रहे हों। और उन सभी दुखों और निराशाओं के साथ - अपने अतीत के सारे सामानों को इकट्ठा करके - और उन सभी वस्तुओं को देखकर हम आगे बढ़ने से रुक रहे हैं।

यीशु ऊपर स्वचालित सीढ़ियों पर खड़ा होकर हमें ऊपर आने के लिए बुला रहा है > एक अलग संसार में

ताकि हम आकर उसके साथ उड़ जाएँ। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें और वहां रहें। जहाँ सारी **वस्तुएँ** हमें मिलेंगी ... और बड़ी बड़ी काम हमें दिखाई देंगी।

यीशु के लिए उसे छोड़ दें / त्याग दें / पीछे फेंक दें / दूर हो जाएं। अपने ध्यान केंद्र को बदले / अपनी खोज को बदलें / अपनी प्राथमिकताओं को बदलें।

मत्ती 11:28 - 30 "हे सब **परिश्रम करनेवालो** और **बोझ से दबे हुए लोगों**, **मेरे पास आओ**; मैं तुम्हें **विश्राम** दूँगा। मेरा जूआ (संसार का नहीं) अपने ऊपर उठा लो, और **मुझ से सीखो**; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।"

अतः इसमें एक बात की ज़रूरत है - हमें "कँटीली झाड़ी" काटनी है ताकि हम उसके साथ समय बिता सकें।

सुनना और **बोलना** ज़रूरी है और यीशु के साथ **घनिष्ठ** सम्बन्ध के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण।

इसके लिए **इच्छा - खोज** - प्रभु के साथ **संगति** चाहिए

यीशु मनुष्य बना - हम में से एक की तरह रहा - तो उसने अपने पिता के साथ कब संगति की ???

> मरकुस 1:35 **भोर को जब अन्धेरा ही था** वह उठा और बाहर निकल कर एकान्त में गया और वहां प्रार्थना करने लगा।

1. **वह समय जो यीशु चाहता है - भोर का समय**
2. **वह अपनी शिक्षा कब आरंभ करता था?**
   लूका 21:38 और **भोर को तड़के** सब लोग उसकी **सुनने के लिये** मन्दिर में उसके पास आया करते थे।
3. पुनरुत्थित यीशु को **सबसे पहले देखने वाली**?
   यूहन्ना 20:1 और 14 सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी **भोर को अंधेरा रहते ही** कब्र पर आई
4. **आदम के साथ परमेश्वर कब चलता था**?
   उत्पत्ति 3:8 फिर उन्हें **दिन के ठंडे समय** वाटिका में यहोवा परमेश्वर के चलने का शब्द सुनाई दिया
5. **मन्ना का पाठ**
   निर्गमन 16:12-14, 18, 21 और **भोर को** तुम **रोटी** से तृप्त हो जाओगे; और तुम यह जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

- यूहन्ना 6:35 यीशु ने उनसे कहा, "**जीवन की रोटी मैं हूँ** : जो मेरे पास **आता** है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर **विश्वास करता** है वह कभी प्यासा न होगा। यूहन्ना 6:48 जीवन की रोटी मैं हूँ

(16) **प्रत्येक जन** अपनी **आवश्यकता के अनुसार** खाने के लिए बटोर ले।
(18) न तो अधिक बटोरने वाले का अधिक, और न कम बटोरने वाले का कम निकला। प्रत्येक मनुष्य ने अपने खाने के अनुसार [आप "जीवन की रोटी" जितनी चाहे ले सकते हो] ही बटोरा। (19) मूसा ने उनसे कहा, "कोई भी व्यक्ति भोर तक इसमें से कुछ न रख छोड़े।" (20) परन्तु उन्होंने मूसा की बात न मानी, वरन् कुछ ने उसमें से भोर के लिए रख छोड़ा, अत: उसमें कीड़े पड़ गए और वह सड़ गया। इस पर मूसा उन पर क्रोधित हुआ। (21) **और वे भोर को अपने अपने खाने के अनुसार प्रतिदिन बटोर लेते थे; परन्तु धूप तेज़ होते ही वह गल जाता था।**

6. **धूप की वेदी।** धूप हमारी प्रार्थनाओं को दर्शाती है।
निर्गमन 30:7-8 और उसी वेदी पर हारून सुगन्धित धूप **जलाया करे**; **प्रतिदिन भोर को** जब वह दीपक को ठीक करे तब वह धूप जलाए ... यह धूप यहोवा के सामने तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में नित्य जलाया जाए।

प्रकाशितवाक्य 8:3-4 फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिये हुए आया, ... और उसको बहुत **धूप दिया गया** कि सब पवित्र लोगों की **प्रार्थनाओं** के साथ सोने की उस वेदी पर, जो सिंहासन के सामने है चढ़ाएँ। (4) उस धूप का धुआँ पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने पहुँच गया।

7. **याजक आग को पूरी तरह जलाए रखता था।** लैवव्यवस्था 6:12-13 **वेदी पर अग्नि जलती रहे**, और **कभी बुझने न पाए**; और **याजक प्रतिदिन भोर को उस पर लकड़ियाँ जलाकर** होम बलि के टुकड़ों को उसके ऊपर सजाकर धर दे, और उसके ऊपर मेल बलियों की चरबी को जलाया करे। (14) **वेदी पर आग लगातार जलती रहे; वह कभी बुझने न पाए।**

मत्ती 3:11 वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।

8. **प्रथम फल परमेश्वर का है।** नीतिवचन 3:9 अपनी सारी उपज के प्रथम फल से तथा अपनी सम्पत्ति के द्वारा यहोवा का आदर करना।

9. **दाऊद परमेश्वर के मन के अनुसार था। क्यों?**

भजन संहिता 5:3 हे यहोवा, **भोर को** मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी, मैं **भोर को** प्रार्थना करके तेरी बाट जोहूँगा।

भजन संहिता 57:8 हे मेरे प्राण, जाग उठ! हे सारंगी, हे वीणा, जाग उठो! मैं **भोर को भी जगा** उठाऊंगा।

भजन संहिता 63:1 हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है, **मैं तुझे भोर को ढूँढ़ूँगा**; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।

भजन संहिता 90:14 **भोर को हमें अपनी करुणा से तृप्त कर**, कि हम जीवन भर जयजयकार और आनन्द करते रहें।

भजन संहिता 119:147 **भोर होने से पहले ही उठकर मैं** सहायता के लिए तुझे पुकारता हूं; मैं तेरे वचनों की **आस** लगाए हूं।

10. श्रेष्ठगीत 7:12 आओ हम सवेरे जल्दी उठें ...

श्रेष्ठ गीत 7:12 **फिर सबेरे उठकर** दाख की बारियों में चलें, और देखें कि दाखलता में कलियाँ लगी हैं कि नहीं, कि दाख के फूल खिले हैं या नहीं, और अनार फूले हैं या **नहीं। वहाँ मैं तुझ को अपना प्रेम दिखाऊँगी।**

वह आपको बगीचे में बुला रहा है ... वह हर सुबह आपके साथ चलना चाहता है, जैसे वह आदम और हव्वा के साथ चलता था।

वह आपको अपना प्रेम देना चाहता है। आप कैसे जवाब देंगे?

आप क्या करेंगे? आप क्या चाहते हैं?

वह हर सुबह आपका इंतज़ार करता है।

A. उसकी आवाज़ सुनना (रेमा) - वह अभी भी बोल रहा है

1. इब्रानियों 3:7,15; 4:7; 5:14; 12:25
2. यूहन्ना 10:27; 16:13
3. हबक्कूक 2:1-2
    a. एकांत स्थान देखें : भजन संहिता 27:5 निर्गमन 33:21-22
    b. जब आप प्रार्थना करें तो दर्शन की खोज करें
    c. उसके वचन की प्रतीक्षा करें : भजन संहिता 119:74,114,123,147
    d. उसकी आवाज़ को पहचानें: 1 राजा 17:2,8; 18:1, 9-13
    e. दर्शन लिख लें : हबक्कूक 2:1-3